प्रवचन

परमहंसश्रीहंसानंदजीसरस्वतीदण्डीस्वामीजी

विषय तालिका

CD # 46 * JUL – B 2011 *

SN	Title	Min	Coding		Contents	
1	01.mp3	35	⊕	ज्ञान कांड - १ -	**गीता : २/१६ :: एक सत् है व दूसरा असत् है,** जो सदा रहता है वह सत् है और जो दिखाई तो पड़ता है पर रहता नहीं है वह असत् है। पुरुष की छाया पुरुष से उत्पन्न होती है और उसी में लीन हो जाती है तथा दीखने पर भी होती नहीं, रज्जु में सर्पवत् ये संसार भी आत्मा में छायारूप झूठा ही है-जैसे स्वप्न द्रष्टा में सपना । माया के विषय में ३ मत :- १ श्रौत यानि श्रुति के अनुसार - असत् २ यौक्तिक यानि युक्तिशास्त्रानुसार - अनिर्वचनीय ३ लौकिक यानि लोक व्यवहार द्वारा - जगत सत्य है	⊕
2	02.mp3	32	⊕		अध्यात्म रामायण :: **प्रथम सर्ग :: राम हृदय ::** सीताजी द्वारा हनुमानजी को **भगवान राम के नि०नि० स्वरूप का निरूपण** – 'रामं विद्धि परं ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वययं, सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं सत्ता मात्रं अगोचरं । आनंदम् निर्मलं शांतं निर्विकारं निरंजनं, सर्व व्यापिन आत्मानं स्वप्रकाशं अकल्मषं ।।'	
3	03.mp3	33	⊕	ज्ञान कांड - २ -	**गीता : २/१६-१८** :: १६ **सत्** और **असत्** दो ही पदार्थ हैं तीसरा कुछ नहीं है, जो सदा रहे वह सत् और जो दिखाई पडता है पर सदा नहीं रहता वह असत् है जैसे स्वप्न। द्रष्टा सत्य है वही ब्रहम है, दृश्य जगत मिथ्या है। पुरुष की छाया दिखाई देती है पर मिथ्या है जैसे रज्जु में सर्प। हमारी दर्पण रूपी अधिष्ठान आत्मा में ये जगत छाया चित्रों के समान दिखाई पड़ता है TV के शीशे की तरह। आत्मा दर्पण भी है और द्रष्टा भी क्योंकि चेतन है अतः 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' १७ अविनाशी तो तू उसको जान जिससे सारा विश्व व्याप्त है, अविनाशी आत्मा का नाश करने में कोई समर्थ नहीं है जैसे पुरुष की छाया उत्पत्ति-नाशवान है पर झूठी है, वह पुरुष का नाश नहीं कर सकती, आत्मा सर्वव्याप्त है जैसे तरंगों में जल एवं आभूषणों में सुवर्ण १८ ये देह ही जन्मने-मरने वाले हैं, देही आत्मा केवल द्रष्टा साक्षी नित्य अविनाशी अविकारी अप्रमेय और अकर्म है सभी कर्म दे०इ०म०बु०में हैं आत्मा सदा एक समान प्रकाशमान रहता है अतः तुम अपने वर्णाश्रमानुसार धर्मरूपी कर्म करो और आत्मा को अविनाशी देखते रहो तथा अपने को अकर्ता जानकर दे०इ०म०बु० से कर्म करते रहो।	⊕
4	04.mp3	30	⊕	⊕	सीताजी द्वारा हनुमानजी को भगवान राम के **निनि० स्वरूप का निरूपण –'रामं विद्धि परं ब्रह्म'** राम का निनि०स्वरूप परमब्रह्म है, एक अद्वितीय सर्व का आधार-अधिष्ठान एवं जीवात्मा हैं और मेरा स्वरूप भी इस प्रकार है :: **'मामृविद्धि मूलप्रकृतिं'..**राम के सामीप्य मात्र से ही मैं जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करती हूँ, राम मुझसे कभी मिलते नहीं है। राम की दृष्टि पड़ते ही मैं जड़ माया जगत के रूप में परिणित हो जाती हूँ अतः ये जगत मुझ माया का ही परिणाम है। **'राम ब्रह्म परमारथ रूपा'** ।	
5	05.mp3	44	⊕	ज्ञान कांड - ३ -	**गीता २/१६-१६** :: १६अर्जुन सत् और असत २ पदार्थ हैं, जो सदा रहे वह **सत्** है और जो दिखाई पड़ता है पर सदा रहता नहीं वह **असत्** है जैसे स्वप्न, स्वप्नद्रष्टा सदा रहता है, ऐसे ही जागृत सदा नहीं रहता पर जा०द्रष्टा सदा रहता है, सदा रहने वाला सच्चि०ब्रह्म है अर्जुन वही तुम्हारा स्वरूप है। हमारा-तुम्हारा आत्मा जगत द्रष्टा है, सत्य ज्ञान आनंद से पूर्ण आत्मा पुरुष है एवं ये देह/संसार छाया हैं, आत्मा रज्जु है व जगत सर्प है, हमारी आत्मा सर्प रूपी जगत का आधार-अधिष्ठान है जिससे ये जगत उत्पन्न होता है उसीमें रहता है फिर उसीमें समा जाता है १७ नाशरहित तू उसको जान जिससे संपूर्ण जगत व्याप्त है, इस अविनाशी का नाश करने में कोई समर्थ नहीं हैं १८ ये देह ही जन्मने-मरने वाले हैं किन्तु आत्मा अप्रमेय अविनाशी असंग है१६ जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसे मरा मानता है वे दोनों ही नहीं जानते क्योंकि आत्मा अजन्मा है अतः मरता नहीं और अकर्म है इसलिये किसी को मारता नहीं। आत्मा का निर्विकार, निरवयव स्व०निरू० २०-२५ अगले **प्रवचन ७** में	⊕
6	06.mp3	38	⊕		**सीताजी द्वारा भगवान राम के निन०स्वरूप निरूपण :: 'रामं विद्धि परम ब्रह्म..'** राम अकर्म हैं सारे कर्म मुझ प्रकृति में हैं, **'माम विद्धि मूल प्रकृतिं..'** मुझे ही माया कहते हैं, सभी शरीरों व नाम-रूपों को मैंने ही बनाया है और राम सब नामरूपों के भीतर समाये हैं और देख रहे हैं। मैं ही जगत / अनंत कोटि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति-पालन-संहार करती हूँ, राम तो केवल द्रष्टा-साक्षी हैं। सकल संसार की लीला राम के आधार-अधिष्ठान में मैं ही करती हूँ। संक्षेप में रामकथा तथा **सहस्त्रमुख रावण का प्रसंग**	
7	07.mp3	33	⊕	ज्ञान कांड - ४ -	**गीता २/२०-२२::** २० आत्मा का जन्म नहीं होता है अतः मृत्यु भी नहीं होती है क्योंकि मृत्यु जन्मने वाले की ही होती है। ये शरीर ही जन्मने-मरने वाले हैं। आत्मा तो शरीर के भीतर बैठकर देखने वाला केवल साक्षी चेतन अकर्म एवं गुणातीत है। आत्मा सदा एकरस रहता है अतः अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के हनन होने पर भी आत्मा का नाश नही होता जैसे घट के टूटने पर घटाकाश का २१ जो ईश्वर और गुरु कृपा से आत्मा को अविनाशी, नित्य, अजन्मा और अव्यय है वह ज्ञानी पुरुष कैसे किसी को मारता अथवा मरवाता है, आत्मा अकर्म है २२ देहधारी आत्मा पुराने वस्त्र के समान पुराने देह त्याग कर नये देह धारण करता है-'दृ०में निर्विकारिता अभीष्ठ है'। **मैं देही नहीं आत्मा हूँ यह दृड़ निश्चय ही ज्ञान है।**	⊕
8	08.mp3	30	⊕		**सा०वेद-छा०उ०-७तवाँ अ०** :: ब्रह्माजी के पुत्र नारदजी का अपने अग्रज सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार को दण्डवत् प्रणाम कर ब्रह्मज्ञान केने की याचना की और सनकादि द्वारा नारदजी से उनके अध्ययन के बारे में पूछने पर नारदजी का अपने अध्ययन का संक्षेप में वर्णन । ब्रह्मज्ञान का साधन ईश्वर की वाणी वेद हैं क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ हैं तथा **जीव के चार दोष** ::- १ भ्रम २ प्रमाद ३ कर्णापाटो ४ विप्रलिप्सा, ईश्वर में नहीं हैं।	
9	09.mp3	31	⊕	ज्ञान कांड - ५ -	**गीता २/२२-२५::** २२ ये देह जीवात्मा का एक वस्त्र है व जीवात्मा वस्त्रधारी है वस्त्रधारी कभी वस्त्र नहीं हो सकता। देह जड़ है और देहधारी चेतन इन देहों का द्रष्टा है। जीवात्मा वहीं रहता है केवल देह बदलते रहते हैं। आत्मा अमृत-ज्ञान-सुखरूप है, इस प्रकार आत्मा को देह से अलग जानो २३ क्योंकि आत्मा आकाश से भी अतिसूक्ष्म और व्यापक है इसलिये इस अविनाशी आत्मा का अस्त्र-शस्त्र अग्नि जल वायु आदि कोई भी नाश करने में समर्थ नहीं है २४ आत्मा अच्छेद्य अदाहृय अक्लेद्य अशोष्य अचिन्त्य है पर चित्त के चिन्तन को देखता है। आत्मा द्रष्टा साक्षी नित्य अचल स्थाणु सनातन है २५ आत्मा अव्यक्त निनि० अविकारी और सर्वत्र व्याप्त है । इसलिये अर्जुन अपनी आत्मा को सच्चिदानंद जानकर तुझे शोक करना उचित नहीं है।	
10	10.mp3	25	⊕		नारद सनतकुमार सम्वाद :: **भूमा तत्व निरूपण** :: भूमा ही आत्म तत्व है, ब्रह्म तत्व है एवं सुख का समुद्र है, भूमा माने महान उसे ही ब्रह्म कहते हैं। भूमा के ज्ञान से जीव मुक्त हो जाता है। जहाँ देह इ०म०बु०प्रा० की पहुँच नहीं है वह भूमा तत्व है, वह देह इ०म०बु०प्रा० का प्रकाशक है। जों इन्द्रियों के द्वारा अन्य को जानता है वह अल्प है, वह ब्रह्म की तिलभर जगह में पड़ा रहता है। अल्प मर्त्य है व भूमा अमृत है, वही हमारा तुम्हारा आत्मा है।	
11	11.mp3	34	⊕	ज्ञान कांड - ६ -	**गीता २/२६-२८::** पुनरावृत्ति २३-२५ २६ अर्जुन यदि तुम अपनी दृष्टि से इस आत्मा को जन्मने-मरने वाला समझते हो तो भी शोक का कोई अवकाश नहीं है २७ क्योकि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अटल है, शरीर का ही जन्म हुआ है अतः इसकी मृत्यु का क्या शोक करना? आत्मा अजर-अमर एक अद्वितीय है तथा मैं ही सबकी आत्मा हूँ २८ सभी भूत-प्राणियों के देह पहले अव्यक्त थे और मृत्योपरान्त भी ये नहीं रहेंगे, ये केवल मध्य में ही व्यक्त होते हैं - **मध्य में दृश्यमान जगत को माया कहते हैं।** आत्मा अनादि अनंत है, जागृत जगत भी स्वप्न है, भ्रम है **द्रष्टा-साक्षी आत्मा ही सत्य है**, वही तुम्हारा भी स्वरूप है।	
12	12.mp3				**गीता २/२७-२६::** पुनरावृत्ति २७-२८ २६ अर्जुन ये आत्मा आश्चर्यरूप है यानि दुर्लभ है, सहस्त्रों मनुष्यों में कोई एक मुझे जानने का प्रयास करता है और उनमें से कोई बिरला ही बारम्बार श्रवण-मनन-निधिध्यासन के अभ्यास के बाद मुझे पूर्णरूप से जान	

		48		ज्ञान कांड - ७ -	पाता है, जो आत्मतत्त्व का प्रवचन करता है ये और भी आश्चर्यरूप है, उस आत्मतत्त्व का साधन-चतुष्ट्य संपन्न अधिकारी श्रोता भी आश्चर्य है और आश्चर्य है कि कोई-२ तो सुनकर भी इस तत्त्व को नहीं जान पाता है। **"सत्यनारायण की कथा का तात्पर्य एवं महात्म्य" -** नारायण ही सत्य हैं, नर समूह को **नार** एवं उनके आश्रय को **अयन** कहते हैं, वही **नारायण** है। नारायण **सत्-चित्-आनंद** ब्रह्म हैं और वही सभी जीवों का भी स्वरूप है अतः सद्य मुक्ति हेतु जीव को अपना स्वरूपज्ञान अभीष्ट है।	
13	13.mp3	36		ज्ञान कांड - ८ -	**गीता २/२६-३०::** २६ वें श्लोक में आत्मा-परमात्मा के एकत्व अथवा उस ब्रह्मतत्त्व की दुर्लभता का वर्णन है जिसके ज्ञान से जीव मुक्ति को प्राप्त करता है। **दुर्लभता क्रम** :: नर शरीर ▶चतुष्ट्य साधन सम्पदा▶ निष्कामकर्म + भक्ति▶ महापुरुष संश्रय ▶ आत्मकृपा ▶फिर इस तत्त्व को जानने वाला, बताने वाला एवं श्रोता की दुर्लभता ३० **तत्त्व निरूपण :-** देह और देही २ वस्तुऐं है, देह दृश्य हैं और देही द्रष्टा है जो सबकी आँखों से देखता है पर दिखाई नहीं पड़ता है, देह अनेक हैं परन्तु हर देह में देखने वाला एक अद्वितीय है वह ब्रह्म है, सच्चिदानंद उसका स्वरूप है। सभी देह मन्दिर हैं और सभी देवालयों में एक ही देव है उसे ब्रह्म कहते हैं। देव अदृष्टो-द्रष्टा है :: **स्थूल शरीर का वर्णन** ::	
14	14.mp3	48		ज्ञान कांड - ९ -	**गीता २/३०** :: ३० अर्जुन देह और देही २ पदार्थ हैं, हमारा तुम्हारा स्वरूप देही है वह नित्य और अवध्य है उसका जन्म-मरण नहीं होता तथा वह सद्-चिद्-आनंदरूप है ऐसा ब्रह्म का स्वरूप है वही तुम्हारा भी स्वरूप है, ये शरीर मेरी माया से बनते-बिगड़ते रहते हैं। देवता मनुष्य असुर पशु पक्षी सभी देहों में बैठकर देखने वाला आत्मा मैं ही हूँ :: **विस्तार से स्थूल-सूक्ष्म शरीर रचना + गर्भोपनिषद** ::	
15	15.mp3	37		ज्ञान कांड - १० -	**गीता २/३० ::** ३० की पुनरावृत्ति, जीव और ईश्वर के ३ देह हैं १ **स्थूल** देह जो दृश्य है २ १६ तत्त्व वाला **सूक्ष्म** देह जिसमें चेतन आत्मा के बुद्धि में प्रतिबिम्ब पड़ने से सभी कर्म होते हैं ३ **कारण** देह, जीव जो आत्मा का प्रतिबिम्ब है ये अपने स्वरूप आत्मा या परमात्मा को नहीं जानता, इस अज्ञानता को ही कारणदेह कहते हैं। जीव इन तीनों देहों से अलग होता है व इनों देहों को जानता है और अपनी अज्ञानता को भी जानता है पर देहों को ज्ञान नहीं है। जीव का वास्तविक स्वरूप ब्रह्म ही है ईश्वर की भक्ति करने से प्रभु उसे अपना स्वरूप बना देते हैं :: **तीन अवस्थाऐं एवं पंचक्लेष निरूपण** ::	
16	16.mp3	40		ज्ञान कांड - ११ -	**गीता २/३० ::** अर्जुन देह और देही २ ही पदार्थ हैं तीसरा कुछ भी नहीं है, जो देह में रहता व उसे देखता है वह देही है, देही द्रष्टा व देह दृश्य है। सब देहों में बैठकर देखने वाला आत्मा के रूप में मैं परमात्मा ही हूँ। जितने भी स्थू०सू०का० जीव के तथा विराट हिरण्य० अव्याकृत मुझ ईश्वर के देह है वे सब मेरी इच्छा मात्र/माया से क्षण मात्र में बन जाते हैं अतः **"ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवौ ब्रह्मैव न परा"।**	
17	17.mp3	42		ज्ञान कांड - १२ -	**गीता २/३० ::** संसार में २ ही वस्तु हैं, दिखाई पड़ने वाला देह ओर इन्हें देखने वाला देही, उसे ही ब्रह्म आत्मा व परमात्मा कहते हैं जो नित्य अविनाशी और अकर्म है, ये दृश्य जगत माया है और आत्मा द्रष्टा है कार्य-कारण प्रकृति में ही सारे कर्म हैं। शरीर मन वाणी द्वारा न्याय-अन्याय सभी के **कर्म के पाँच हेतु** :- १ अधिष्ठान - स्थूलदेह २ कर्ता - साभास अंतःकरण ३ करण - इन्द्रियाँ, कर्म के साधन ४ चेष्टा - प्राणों के द्वारा क्रिया ५ दैवम् - इन्द्रियों के अनुग्राहक देवता। आत्मा अकर्ता द्रष्टा-साक्षी है परन्तु अज्ञानी लोग आत्मा को ही कर्ता मान लेते हैं। आत्मा दर्पण के समान है जिसमें ये जगत छायाचित्र के समान दिखाई पड़ता है, माया से बने ये छायारूपी देह बनते बिगड़ते रहते हैं।	
18	18.mp3	43		ज्ञान कांड - १३ -	**गीता २/२५-२६ ::** २५ अर्जुन, न हम देह हैं न ये देह हमारे हैं हम इनसे अलग नित्य अव्यक्त अविकारी अचिन्त्य द्रष्टा साक्षी है २६ यदि तुम अपनी आत्मा को अपनी दृष्टि से जन्मने-मरने वाला मानते हो तो भी शोक नहीं करना चाहिये क्योंकि २७ जिसका जन्म है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है और उसमें जो अव्यक्त आत्मा/ब्रह्म है उसका जन्म-मरण होता नहीं २८ ये देह आदि और अन्त में नहीं होते केवल मध्य में ही दिखाई पड़ते हैं अतः इन्हें माया जानना चाहिये, ये जा०स्व० का संसार निद्रारूपी माया का ही कार्य है व हम तीनों काल में रहते हैं २९ बिना भक्ति के आत्म ज्ञान दुर्लभ है, मेरा भक्त ही मेरी कृपा मेरी माया को तथा मेरे सच्चि०स्वरूप को जान जाता है ये आश्चर्य है दुर्लभ है, ये स्वप्न जगत कहाँ से आया व जागने पर कहाँ चला गया अथवा आत्मा के ज्ञान से ये जा० जगत कहाँ चला जाता है, आत्मदेव की ऐसी माया है कि आत्मा के अज्ञान से स्व०-जा० का जगत उत्पन्न हो जाता है, ऐसे ही कोई इस आत्मा का निरूपण भी करता है आश्चर्य है, इस आत्मतत्त्व को सुनने वाले भी दुर्लभ हैं और आश्चर्य है कि कोई-२ तो सुनकर भी इसे नहीं जान पाते क्योंकि वे मोह निद्रा में सोये पड़े हैं।	विशेष
19	19.mp3	53		ज्ञान कांड - १४ -	**गीता २/२६-३० ::** २६ अर्जुन हमारा तुम्हारा **आत्मा आश्चर्यरूप है** क्योंकि आत्मारूपी अधिष्ठान पर ही जा०स्व० का प्रपंच दीख रहा है, ये माया का चमत्कार है। हमारा आत्मा में ये जा०स्व० का संसार पुरुष मे छाया अथवा रज्जु में सर्प की भाँति माया का चमत्कार दीख रहा है किन्तु ये माया पुरुष को छूती नहीं है। द्रष्टा ब्रह्म व दृश्य माया है ३० सभी देहों के भीतर बैठकर देखने वाले को देही कहते हैं देह माया से बन जाते हैं, ये जा०स्व० में ही दीखते हैं तथा पुनः निद्रा मे लीन हो जाते हैं :: **स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर का विस्तार से वर्णन** ::	
20	20.mp3	59			जीव के हृदय में **'मल विक्षेप आवरण'** ३ दोष हैं जो भगवान के दर्शन में व्यवधान हैं, **त्रिकाण्डमय वेद** से इनकी निवृत्ति हो जाती है। निद्रा रूपी माया एवं उसकी जा०स्व०रूपी बरसात ये संसार ही भगवान के दर्शन में व्यवधान है। निष्काम **कर्म** से मल, **उपासना** से मन की चंचलता व **ज्ञानकाण्ड** से अज्ञान-रूपी आवरण का नाश हो जाता है **कर्म** - १ **सामान्यकर्म** २ वर्णाश्रम-पदाधिकार के अनुसार **विशेषकर्म** का विधान । **उपासना** - भगवान राम द्वारा **नवधा भक्ति** निरू० + भागवत् में नवधा भक्ति निरू० **श्रवणं कीर्तनं विष्णु-स्मरणं पाद-सेवनं अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यं आत्म-समर्पणं :-** जीव अपनी देह इ०म०बु०प्राण अथवा नामरूप को भग०को अर्पण करने पर पूर्ण पुरुष सच्चि०ब्रह्मरूप ही हो जाता है, ये समर्पण भावना है।	1
21	21.mp3	50			वर्णाश्रम-पदाधिकार के अनुसार किये गये कर्म ही **कर्म** कहलाते है - **सकाम** कर्म से संसार एवं **निष्काम** कर्म से चित्त शुद्धि द्वारा भगवान मिलते हैं। २४ घंटे में जा०स्व०सु० तीनों बदल जाते हैं व इन तीनों को देखने वाले को ब्रह्म कहते हैं, द्रष्टा का कभी नाश नहीं होता वही सच्चिदानंद स्वरूप ब्रह्म हमारा आत्मा है **भक्ति** से चित्त एकाग्रता होती है-**नवधा भक्ति** निरूपण, **संत महिमा,** संतों की तीर्थ से तुलना, **सतसंग महिमा** व त्रिवेणी से तुलना - यमुना कर्मनाशा, गंगा भक्तिप्रदा, सरस्वती ज्ञानदात्री	2
22	22.mp3	43			भगवान के ज्ञान का साधन 'कर्म-भक्ति-ज्ञान' **त्रिकाण्डमय वेद** है, सकाम कर्म से संसार एवं **निष्काम कर्म** से चित्त शुद्धि, **भक्ति** से चित्त नैश्चल्यं के पश्चात गुरु मुख से ज्ञान प्राप्त होता है :: भगवान राम द्वारा **नवधा भक्ति** निरूपण :: ३ **सतसंग महिमा**	3
23	23.mp3	46			जीव के हृदय में **'मल विक्षेप आवरण'** ३ दोष हैं जो भगवान के दर्शन में व्यवधान हैं, **त्रिकाण्डमय वेद** से इनकी निवृत्ति हो जाती है। जा०स्व०सु० कार्य-कारण माया है, सु०कारण और जा०स्व० कार्य हैं। माया मेघ कारण है तथा जगत रूपी बरसात कार्य है। कारण एक होता है व कार्य अनेक होते हैं। जा०स्व०सु० ही 'मल विक्षेप आवरण' हैं जो भगवान के दर्शन में व्यवधान हैं। अनेक जन्मों के पाप ही से **मल दोष** होता है जिसकी निवृत्ति **निष्कामकर्म** से होती है, **भक्ति** से चित्त एकाग्रता द्वारा **विक्षेप** और फिर गुरुकृपा से **स्वरूप-ज्ञान** द्वारा **अज्ञान-आवरण** का नाश हो जाता है एवं भगवान मिलते हैं। भगवान के मिलने पर सभी साधन निष्प्रयोजन हो जाते हैं तथा भगवान की कामना भी नहीं रहती क्योंकि **ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मरूप ही हो जाता है, उसे अपनी आत्मा में ही प्रीति, रति, तृप्ति और सन्तुष्टि होती है।**	4
24	24.mp3	30			**वेदों का अर्थ भगवान ही है**, सभी वेदों से मैं ही जानने योग्य हूँ, वेद मुझसे मुझे बताने के लिये ही प्रकट हुए हैं। एक मैं ही **'सत्-चित्-आनंद'** हूँ, मुझे पाकर जीव का पुनर्जन्म नहीं होता अतः भगवान के ज्ञान से ही जीव की मुक्ति है सर्वज्ञ चतुर्भुज विष्णु रूप में भगवान ने ब्रह्माजी को ज्ञान का उपदेश दिया, श्रीमद्भागवत् के प्रथम श्लोक एवं चतुश्लोकी भागवत् में भी इसी का निरूपण है :- हे ब्रह्मन् ! सृष्टि के आदि में एक मैं ही था, न सत् था न असत् था, जो कुछ भी दिखाई पड़ रहा है वह भी मैं ही हूँ, मेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अपनी माया से मैं एक ही अनेकरूप हूँ। आदि में मैं ही था, मध्य में भी मैं ही हूँ और अन्त में भी केवल मैं ही शेष रहता हूँ :: **गुरु परम्परा का वर्णन** ::	
25	25.mp3	41			सुषुप्ति अज्ञान अंधकार रूप माया मेघ है और जा०स्व० जगत इसकी बरसात है, त्रि० वेद 'नि०कर्म-उपासना-ज्ञान' से क्रमशः 'मल-विक्षेप-आवरण' की निवृत्ति हो जाती है, भगवान राम 'नवधा' भक्ति बता रहे हैं :- १ संतों का संग २ भगवत् कथा सुनना - भगवान का नि०नि० और स०सा० स्वरूप निरूपण ३ गुरुपद सेवा ४ भगवान का गुणगान	5

26	26.mp3	28				भगवान ही इस जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं, भगवान में ही ये जगत उत्पन्न होता है, रहता है और विलीन हो जाता है। किसी भी वस्तु के निर्माण में निमित्त और उपादान २ कारण होते हैं। उपादान कारण मुख्य होता है तथा कारण का कार्य में प्रवेश होता है। किसी भी कार्य के सम्पन्न होने में **'इच्छा-ज्ञान-प्रयत्न'** अथवा क्रमशः **'मन-बुद्धि-प्राण'** आवश्यक हैं जैसे घट बनाने के लिये निमित्तकारण कुम्भकार तथा उपादान कारण माटी दोनों की आवश्यकता होती है।	
27	27.mp3	36				भगवान के ज्ञान के लिये त्रि०वेद और गुरु की आवश्यकता है, ज्ञानकाण्ड द्वारा भगवान का ज्ञान होने पर वेद भी निष्प्रयोजन हो जाते हैं। भगवान नारायण ने लोक शिक्षा हेतु अपनी वाणी वेद को करके दिखाने के लिये 'राम' रूप में नर अवतार लिया । भ० राम द्वारा 'नवधा' भक्ति :- १ संतों का संग २ भगवत् कथा सुनना-भ०का निनि० और ससा० स्वरूप निरूपण ३ गुरुपद सेवा	6
28	28.mp3	22				सीताराम ही जगत के माता पिता हैं, सम्पूर्ण नामरूप जगत की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय सीताजी करती हैं, सदा चलते रहने वाले को जगत कहते हैं, राम अचल अविनाशी अकर्म जगत के आधार-अधिष्ठान एवं प्रेरक हैं। राम की इच्छा शक्ति महामाया सीता राम की प्रेरणा से जगत की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय करती हैं। राम अजन्माा और सर्वआत्मा हैं परन्तु प्रकृति को अपने वश में करके माया से वे ससा० देह धारण करते हैं। संसार के सभी नामरूप/देह राम का ही विराटरूप हैं जिसमें बैठकर निनि० राम ही देख रहे हैं। दृश्य माया है और द्रष्टा राम हैं। सीता छाया का स्वरूप हैं और राम पूर्ण पुरुष हैं।	Imp
29	29.mp3	39				दो ब्रह्म को जानना चाहिये १ शब्द ब्रह्म - भगवान की वाणी वेद २ परम ब्रह्म । जो शब्द ब्रह्म को पढ़ता है वह परम ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। परम ब्रह्म को बताने के लिये ही शब्द ब्रह्म प्रकट हुआ है। शब्द ब्रह्म त्रिकाण्डमय है। अपने वर्णाश्रम पदाधिकार के अनुसार किये जाने वाले कर्म 'कर्मकाण्ड' है, दूसरा भक्तिकाण्ड है भगवान राम 'नवधाभक्ति' कहते हैं :- १ संतों का संग २ भगवत् कथा सुनना । भक्ति की महिमा - **गजेन्द्र मुक्ति, जटायु उद्धार** एवं **द्रौपदी चीर-हरण आदि प्रसंग**	7
30	30.mp3	28				भगवान राम सीताजी से बोले हे सीते ! हनुमानजी हमारे भक्त और अधिकारी हैं इसलिये तुम इन्हें मेरा नि०नि० स्वरूप बताओ। इस पर सीताजी बोलीं :- 'रामं विद्धि परम् ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयम्...'।। नाम का महत्व तथा हीरे और कुँजड़े की कथा ।।	
31	31.mp3	42				भगवान राम ही स्वयं भक्ति का स्वरूप बता रहे हैं, 'नवधा' भक्ति :- १ संतसंग २ संतों से मेरे निनि०व ससा० स्वरूप निरूपण सुनना ३ गुरु की पद सेवा ४ भगवान के गुणगान ५ गुरु से अर्थ सहित मंत्र लेकर मंत्रजाप तथा भगवान में दृढ़ विश्वास	8
32	32.mp3	27				सीताजी द्वारा राम का निनि०स्वरूप निरूपण:- 'रामं विद्धि परम् ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयम्...' हे हनुमान! राम का निनि० स्वरूप सच्चिदानंद है, वे प्रकृति से परे तथा सबसे बड़े है अतः परम ब्रह्म हैं, वे सभी उपाधियों के भीतर और बाहर भी हैं किन्तु उनसे परे हैं....। मुझ माया का स्वरूप निरूपण :- 'मामु विद्धि मूल प्रकृतिं...'। जीव-ईश्वर का एकत्व	
33	33.mp3	36				भग० राम ही स्वयं भक्ति का स्वरूप बता रहे हैं, 'नवधा' भक्ति :- १ संतसंग २ मेरी कथा प्रसंग सुनना ३ गुरु की पद सेवा ४ भगवान के गुणगान ५ गुरु से अर्थ सहित मंत्र लेकर मंत्रजाप तथा भगवान में दृढ़ विश्वास ६ षट्क सम्पदा एवं चतुष्ट्य साधन से सम्पन्न होकर गुरु की शरण लें व बहुत कर्मों से वैराज्ञवान होकर सब जगह से मन हटाकर केवल मुझमें मन लगाये	9
34	34.mp3	30				सीताजी द्वारा भगवान राम का निनि० स्वरूप निरूपण :-'रामं विद्धि परम् ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयम्...' राम सबकी आत्मा है, आत्मा का स्वरूप :- ''आत्मा साक्षी विभु पूर्ण एको मुक्तः चिदक्रिय...'' । मुझ माया का स्वरूप :- 'मामु विद्धि मूल प्रकृतिं...'	
35	35.mp3	32				भग० राम ही स्वयं भक्ति का स्वरूप बता रहे हैं, 'नवधा' भक्ति :- ७ चराचर जगत को मेरा स्वरूप देखे :: कार्य कारण से अभिन्न होता है पर कारण सत्य होता है और कार्य मिथ्या। माटी-घट, स्वर्ण-आभूषण व अग्नि-चिन्गारियों के दृष्टान्त। भगवान ही जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं। एक भगवान ही अनेक-रूपों में भास रहे हैं :: 'सिया राममय सब जग जानी..'	10
36	36.mp3	29				**ओंकार का स्वरूप ::** भगवान से सबसे पहले ओंकार का प्रादुर्भाव हुआ, इसने चार रूप धारण किये :- १ **परा**-जब ब्रह्मरूप था २ **पश्यन्ति**-जब हृदय में आया ३ **मध्यमा**-जब कंठ में आया ४ **वैखरी**-स्वर व्यंजन रूप में बिखर गया। फिर ओंकार ने संसार के सभी नाम-रूप धर लिये - ब्र०वि०म० - जा०स्व०सु० - वि०तै०प्रा० - ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय आदि सभी त्रिपुटी। ओंकार भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम है। इदंरूप से ये मुझ प्रणव/प्रकृति/त्रिपुटियों को और तद्पद से इनके द्रष्टा ब्रह्म को बताता है	
37	37.mp3	31				भग० राम ही स्वयं भक्ति का स्वरूप बता रहे हैं, 'नवधा' भक्ति :- ७ चराचर जगत को मेरा स्वरूप देखो और संतों को मुझसे अधिक जानो क्योंकि वे ही मुझे जनाते हैं तथा जैसे मेघ समुद्र से अधिक महिमावान है	11
38	38.mp3	46				'नवधा' भक्ति :- ७ चराचर जगत को मेरा स्वरूप देखो और संतों को मुझसे श्रेष्ठ जानो क्योंकि वे ही मुझे जनाते हैं। इसमे भग० ने अपना और संतों का स्वरूप बताया है। भग०से भिन्न कोई नहीं है, जो चराचर जगत को मुझ वासुदेव का ही रूप देखता है वही महात्मा है, दुर्लभ है ८ व्यवहार में निर्वाह के लिये नीति न्याय मर्यादा से कमाई करें और उसी में सन्तुष्ट रहें। मिलेगा उतना ही जितना प्रारब्ध में है, अन्याय से लाया गया धन नहीं ठहरता। ऐसा धन दुःख और व्याधि लाता है और घर का भी धन ले जाता है तथा दूसरे का दोष कभी मत देखो क्योंकि इससे द्वेष बुद्धि उत्पन्न होती है और द्वेष और भी बड़ा पाप है	12
39	39.mp3	43				भगवान के ज्ञान का साधन 'कर्म-भक्ति-ज्ञान' **त्रिकाण्डमय वेद** है वर्णाश्रम-पदाधिकार के अनुसार किये गये कर्म ही कर्म कहलाते है - **सकाम** कर्म से संसार एवं **निष्काम** कर्म से चित्त शुद्धि द्वारा भगवान मिलते हैं। **सामान्य** एवं **विशेष** धर्म निरूपण	
40	40.mp3	32				श्रीराम ही जगत के माता-पिता हैं। यहाँ **श्री** नाम भ०राम की महामाया शक्ति सीताजी का है जो जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करती हैं और **राम** जगत-पिता आधार-अधिष्ठान हैं। सीता की उत्पत्ति राम से ही होती है, उन्हीं के आश्रित रहती हैं और उन्हीं में समा जाती हैं पुरुष में छाया के समान, फिर अकेले राम ही रह जाते हैं। यूँ तो छाया होती झूठी है परन्तु पुरुष में मिलने पर सती / पति-स्वरूप यानि सत् ही हो जाती है। सारा विश्व सीताराम की ही संतान है, सम्पूर्ण रामायण का यही विषय है।	विशेष
41	41.mp3	41				भगवान के ज्ञान का साधन 'कर्म-भक्ति-ज्ञान' **त्रिकाण्डमय वेद** है वर्णाश्रम-पदाधिकार के अनुसार किये गये कर्म ही कर्म कहलाते है - **सकाम** कर्म से संसार मिलता है, संसार को पाकर जीव की दरिद्रता नहीं जाती पर **निष्काम** कर्म से चित्त शुद्धि द्वारा अविनाशी भगवान मिलते हैं। सभी को सुख की चाह है। **प्रियता की तारतम्यता** :: धन-पुत्र-देह-इन्द्रियाँ-प्राण-**आत्मा सर्वश्रेष्ठ है** :: **सामान्य** एवं **विशेष** धर्म निरूपण। भगवान ने नारायण को जानने के लिये ही करुणा करके ये नर शरीर दिया है।	
42	42.mp3	41				**विशेष कर्म :-** अपने वर्णाश्रम-पदाधिकार के अनुसार कर्तव्य कर्म **सामान्य कर्म :-** अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अक्रोध, गुरु सुश्रुषा, शौचं, सन्तोष, आर्जवम्, अमानित्वं, अदम्भित्वम्, आस्तिकत्वम्। शुद्धि के उपाय :: देह की स्नान से, मन की सत्य से, अन्तःकरण की साधन-चतुष्ट्य से, बुद्धि की ज्ञान से, धन की दान से, घर की साफ-सफाई व यज्ञादि से। ये सब कर्म **निष्काम भाव** से करने चाहिये जिससे अविनाशी सच्चिदानंद भगवान मिलेंगे और **सकाम कर्म** से विनाशी संसार मिलेगा ।ज्ञान	** Imp **
43	43.mp3	50				भगवान के ज्ञान से जीव अजर-अमर अविनाशी हो जाता है तथा दुःख निवृत्ति एवं नित्य सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये भगवान का ज्ञान परम् आवश्यक है। भगवान के ज्ञान के पश्चात वेद की भी निवृत्ति हो जाती है। **'कर्म-उपासना-ज्ञान'** द्वारा क्रमशः 'मल-विक्षेप-आवरण' इनें दोषों की निवृत्ति होजाती है। भक्ति के ज्ञान और वैराग्य दो वीर पुत्र हैं। भगवान के ज्ञान से मृत्यु तथा वैराग्य से दुःख पास नहीं आते। अतः भगवत् प्राप्ति का मुख्य साधन भक्ति ही है। श्रीमद्भागवत् के अनुसार भक्ति का स्वरूप :- **" श्रवणं कीर्तनं विष्णु स्मरणं पाद सेवनं, अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यं आत्म निवेदनं ।"**	
44	44.mp3	56				जा०स्व०सु०-इतनी ही माया है। समष्टि-सुषु० ईश्वर की व व्यष्टि-सुषु० जीव की माया है। जा०स्व०सु० से परे चौथा तुरीय इनका द्रष्टा स्वयं सिद्ध है। जा० की स्थूल एवं स्व० की सूक्ष्म 'कार्य' माया है तथा सुषु० 'कारण' माया है। सभी कर्म सूक्ष्म देह में हैं, स्थूल देह केवल घर के समान हैं। देह इ०म०बु० को प्रकृति भी कहते हैं। चौथा तुरीय हमारा आत्मा प्रकृति के कार्यों का द्रष्टा मात्र है ऐसा जानना ही यथार्थ ज्ञान है। आत्मा अकर्म-अभोक्ता है। सभी की आत्मा एक ही है। द्रष्टा ब्रह्म और दृश्य माया है, बस दो ही वस्तु हैं। सभी शरीरों में देखने वाला तत्त्व 'मैं' एक ही है एवं देह/इ०म०बु० अनेक हैं। द्वैत माया है अद्वैत पुरुष /ब्रह्म है। सत्य ज्ञान आनंद से पूर्ण द्रष्टा को पुरुष कहते हैं।	